ध्येय IAS®

most trusted since 2003

Updated 2019

इतिहास

(सामान्य अध्ययन)

भारतीय संस्कृति एवं विरासत

(भाषा एवं साहित्य)

द्वारा

विजय वेद सर

FACE TO FACE CENTRES

MUKHERJEE NAGAR (Head Office) :	A-12/13 ANSAL BUILDING, DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI - 110009, 9205274741/ 42/ 43/ 44
RAJENDRA NAGAR :	25B, SECOND FLOOR, PUSA ROAD NEW DELHI - 9205274743, 9205274745
LAKSHMI NAGAR :	1/53, 3RD FLOOR, LALITA PARK, LAXMI NAGAR, DELHI-92, 011-43012556, (+91)- 9311969232
RESIDENTIAL ACADEMY :	28/1A, KNOWLEDGE PARK III, GREATER NOIDA, UTTAR PRADESH - 201306, PHONE: 092053 36037/38/39
PRAYAGRAJ :	IIND & IIIRD FLOOR, SHRI RAM TOWER, 17C, SARDAR PATEL MARG, CIVIL LINES, ALLAHABAD PH.: 0532-2260189, 08853467068
LUCKNOW- ALIGANJ CENTRE :	A-12, SECTOR-J, ALIGANJ, LUCKNOW PH.: 0522-4025825, 09506256789
LUCKNOW- GOMTI NAGAR CENTRE:	CP-1, JEEWAN SHOPING COMPLEX, VIRAM KHAND-5, NEAR HUSARIYA CHAURAHA, GOMTI NAGAR, LUCKNOW -227106 PHONE: +91 7234000501, 7234000502
BHUBANESWAR :	OEU TOWER, THIRD FLOOR, KIIT ROAD, PATIA, BHUBANESWAR, ODISHA 751024, PH.: +91 9818244644, 7656949029

LIVE STREAMING CENTRES

Ahmedabad	9879113469/8000162499	Jodhpur	9529989199/9928965998
Aligarh	9837877879	Jalandhar	9888777887
Azamgarh	7617077051	Kanpur	7275613962
Bahraich	7275758422	Kurukshetra	8950728524
Bareilly	9917500098	Lucknow Alambagh	7518373333
Chandhigarh	8146199399/9050888338	Ludhiana	9876218943/9888178344
Faridabad	9711394350	Moradabad	9927622221
Gorakhpur	7080847474	Patiala	9041030070
Gwalior	9893481642	Patna	9334100961
Haldwani	8077728957/7060172525	Rewa	9926207755
Hisar	9996887708	Varanasi	7408098888
Jabalpur	8982082023		

भाषा एवं साहित्य

भारत में भाषा का साहित्य अत्यन्त प्राचीन है।
भारतीय भाषाओं को चार वर्गों में विभाजित किया जाता है।

इण्डोआर्यन भाषा	द्रविड़ भाषा	आस्ट्रिक भाषा	चीनी-तिब्बत
संस्कृत, पालि, प्राकृत	तुलुई (क्लासि०)	संथाली	तिब्बती
बंगला, हिंदी, मराठी	तमिल, तेलगू	गोंड़ी	बोडो
गुजराती, पंजाबी	कनड़, मलयालम्	मुंडारा	लद्दाखी
राजस्थानी		उराव	डफला

साहित्य

- उत्तर भारतीय साहित्य
  - वैदिक
  - बौद्ध, जैन
  - कालीक अध्ययन
    - गुप्तकालीन अध्ययन
- दक्षिण भारतीय साहित्य
  - संगम साहित्य, पल्लव, चोल
  - चालुक्य, राष्ट्रकूट, विजयनगर

संगम साहित्य TP: 200 BC - 300AD (मौर्य-मौर्योत्तर)

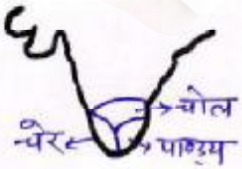

दो प्रकार के साहित्य
- आख्यानात्मक साहित्य
- उपदेशात्मक साहित्य

मदुरा में तीन संगम हुए एवं अनेक रचनाएं हुयीं।

Total - 18

- पद्य साहित्य
  संख्या - 8
  ↓
  एत्तुकोई
- गद्य गति
  संख्या - 10
  ↓
  पत्तुपातु

संगम साहित्य उस साहित्य को कहा जाता है जिसे पाण्ड्यो के संरक्षण में होने वाले कवियो के तीन सम्मेलनों के दौरान लगभग (200 BC - 300 AD) के बीच लिखी गयी।

संगम साहित्य की रचनाए 2 समूहो में मिलती है।

1. मेलकण्णकु (आख्यान) साहित्य
2. कीलकण्णकु (उपदेशात्मक) साहित्य

दोनो समूहों में अनेक रचनाए लिखिगयी। इनमे से अधिकांश प्राप्त नही हुआ है। प्राप्त महत्वपूर्ण पुस्तको में तोलकपियर की रचना तोलकपियम (व्याकरण ग्रंथ) एत्थुकोई पत्थुपातु साहित्य तथा बाद में लिखे गए महाकाव्य जैसे शिल्पादिकारम्, मणिमेखलै, भारतम् आदि आते है।

संगम साहित्य से उसकाल के राजनीतिक सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक पक्षो पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। हालाकि घटनाओं के तिथियों का वर्णन नही होने के कारण राजनीतिक पक्षो पर सीमित जानकारी हो जाती है।

संगम राजनीति एवं प्रशासन

- राजनीति मुखिया तंत्रात्मक थी
- तीनो शक्तियों के बीच आपस में राजनीतिक संघर्ष होता रहता था
- महत्वपूर्ण शासक

चेर, चोल, पाण्ड्य

चेर - उदयन जेरल, अदन, शेनुगुत्तन
चोल - इलैयम / इलारा करिकाल
पांड्य - नेन्दु झेलयान

प्रशासन-केंद्र → शासक
मंत्री एवं अधिकारी

↓

प्रान्त → मण्डलम्

↓

जिला → नाडु

↓

ग्रामिण → मुखिया

संगमकालीन अर्थव्यवस्था

संगम साहित्य से उसकाल के आर्थिक पक्षो की बेहतर जानकारी प्राप्त होती है संगमकाल में कृषि उत्पादन व्यापार वाणिज्य आदि की स्थिति काफी अच्छी थी जैसे-

चावल गन्ना रागी कपास पान एवं मसालो की खेती की जाती थी कृष्णा एवं कावेरी नदी का डेल्टा सबसे विकसित कृषि क्षेत्र था।

अनेक प्रकार के व्यवसाय प्रचलित थे बढ़ई लोहार कुम्हार रस्सी बनाने वाले - चमड़े का कार्य करने वाले कीमती पत्थरो, मोती सोना चाँदी के आभूषण बनानेवाले शिल्पियों की चर्चा मिलती है संगम काल मे वस्त्र उद्योग काफी अच्छी स्थिति मे था अरिकामेडु मुसलिपट्टनम् उरैयूर, मदुरई आदि सूती वस्त्र उत्पादन के महत्व पूर्ण केंद्र थे।

व्यापार वाणिज्य की स्थिति अच्छी थी संगम राज्य आपस में तथा उत्तर राज्यो से व्यापार करते थे विदेशी व्यापार की स्थिति काफी बेहतर थी सभी संगम राज्य रोम के साथ व्यापार करते थे। रोम के साथ अरब सागर एवं लाल सागर होते हुए सीधा व्यापार था। सूती वस्त्र, रेशमी वस्त्र हाथी दांत की बनी वस्तुए, मोती एवं

कीमती पत्थरों के आभूषण तथा मसालो का रोम को निर्यात किया जाता था। सोना चाँदी रोमन मृदभाण्ड काँच की वस्तुओं, शराब आदि का आयात होता था। रोम के साथ व्यापार से संगम राज्यों को काफी लाभ प्राप्त होता था

संगमकालीन समाज

- उत्तर-दक्षिण दोनों के मेल से
- उत्तर जैसा सामाजिक जटिलता रूढ़ीवाद भेदभाव नही था
- महिलाओं की स्थिति उत्तर से अच्छी थी
- समाज मोटे तौर पर दो वर्गों मे बटा था।

दक्षिण भारतीय समाज उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत दोनो के मिश्रित विशेषताओं से बना समाज था। संगमकाल में दक्षिण के आर्यीकरण होने से उत्तर की विशेषताएं दक्षिण मे भी पहुँची।

संगम समाज मुख्यतः दो भागो मे विभाजित था।

1. **ब्राह्मण** - ब्राह्मण समाज में उच्च हैसियत रखते थे। वे धार्मिक कार्यों के प्रमुख थे मंत्री एवं अधिकारी बनाए जाते थे कवि एवं लेखक होते थे लेकिन वे रूढ़ीवादी नही थे वे कृषि कार्य भी करते थे। मास मदिरा तथा का सेवन भी करते थे।

2. गैर -ब्राह्मण- इसके तहत ब्राह्मणो को छोड़कर शेष समाज आता था इसके तहत कई समूह थे। जैसे-

a- वेल्लाल- यह कृषक वर्ग था जिसके तहत छोटे बड़े दोनो किसान आते थे। बड़े कृषक परिवार सामन्त की हैसियत में होते थे शासक वेल्लालो से ही आते थे। उत्तर की भाँति दक्षिण मे अलग से क्षत्रिय वर्ग नही था।

b. वैसगास- इसके तहत महाजन, चेट्टीयार, व्यापारी आदि व्यवसाइयों का वर्ग आता था दक्षिण के व्यापारी केवल व्यापार करते थे उत्तर के वैश्यों के जैसे कृषि पशुपालन नही।

c. शिल्पी (दस्तकार)- इसके तहत बढ़ई, लोहार सुनार कुम्भकार रस्सी बनाने वाले आदि आते थे।

d. शिकारी एवं कबिलाई- समाज मे 'एनियर' जैसे शिकारी समूह तथा मालवर जैसे कबिलाई की स्थिति भी मौजूद थी पहाड़ी एवं जंगली क्षेत्रो मे अनेक कबिले रहते थे।

महिलाएँ-: दक्षिण मे इनकी स्थिति उत्तर से सामान्यतः अच्छी थी स्त्रियो को राजनीति शिक्षा आदि क्षेत्रों में अवसर प्राप्त था। पाड्यों के यहां स्त्रिया शासिका तथा अंगरक्षकों की चर्चा मिलती है। निम्न वर्ग की स्त्रिया घर से बाहर जीविकोपार्जन के अनेक कार्यो मे संलग्न थी स्त्रियो को पुनर्विवाह की अनुमति, वर चुनने की स्वतंत्रता थी दहेज प्रथा विद्यमान थी लेकिन स्त्रिया दहेज लेती थी। सती प्रथा विद्यमान थी लेकिन केवल शासकों एवं ब्राह्मणों के परिवारों तक सीमित थी।

संगमकालीन संस्कृति

संगम सस्कृति उत्तर तथा दक्षिण के पारम्परिक मेल से बनी थी ऋषि अगस्त द्वारा दक्षिण में ब्राह्मण संस्कृति के प्रसार की जानकारी मिलती है। ब्राह्मण, बौद्ध, जैन तीनो धर्मों की मौजूदगी थी।

संगमकालीन दक्षिण भारतीय अनेक देवी देवताओ की पूजा करते थे उनके देवी देवता उत्तर एवं दक्षिण दोनो विशेषताओं के मेल से बने थे प्रमुख देवताओं में मुरुगण (उत्तर के कार्तिकेय जैसे) इन्द्र विष्णु अर्द्धनारिश्वर की चर्चा मिलती है। यलम्मा (भाग्य की देवी) एवं मरियम्मा (अग्निवर्षा की देवी) कन्नगी जैसे देवियो की पूजा की जाती थी।

नृत्य संगीत करने वाले समूहों की चर्चा मिलती है। लोग सामनी विश्वासों (भूत प्रेत जादू टोना) मे भी विश्वास करते थे मृतको को जलाया एवं दफनाया जाता था मृतक संस्कार दो प्रकार के होते थे।

पल्लव कालीन साहित्य

कांची — सिंहविष्णु, महेन्द्रवर्मन नरसिंहवर्मन... अपराजित
(575-600 ई.) (379-397)

• पल्लवों का काल शिक्षा एवं साहित्य की उपलब्धियों का काल था कांची शिक्षा का महान केंद्र था हवेनसांग ने इसकी चर्चा की है। घाटिकाओं में शिक्षा दी जाती थी पल्लव शासकों ने संस्कृत तमिल तेलगू आदि भाषाओं को संरक्षण प्रदान किया।

• पल्लवों के तहत साहित्य का काफी विकास हुआ। पल्लव शासकों ने संस्कृत को संरक्षण प्रदान किया साथ ही तमिल जैसे भाषाओं को भी बढ़ावा दिया।

• पल्लव शासक महेन्द्रवर्मन-I उच्च कोटि का विद्वान था उसने 'मतविलासप्रहसन' नामक महत्वपूर्ण पुस्तक की रचना की थी। इसमें उसने तांत्रिकों कपालिकों आदि की निंदा की उसने अनेक महत्वपूर्ण विद्वानों को संरक्षण दिया। किरातार्जुनियम् के लेखक भार। तथा काव्यादर्श के लेखक दण्डिन उसके दरबार में रहते थे।

• पल्लव काल में अनेक वैष्णव तथा शैव संतों (अलवार एवं नयनार) ने तमिल भाषा में अनेक रचनाएं लिखी। पेरुन्देवर ने इसी समय तमिल महाभारत लिखा।

चोल कालीन साहित्य

तंजावुर — विजयालय → परांतक I → परान्तक II- राजराज (850-870 ई.)
कुलोतुंग ← राजेंद्र III ← राजेंद्र कुलोतुंग I (1270-1320 ई.)

चोल शासको ने तमिल कन्नड़ संस्कृत आदि सभी भाषाओं साहित्य को बढ़ावा दिया। कला एवं संस्कृति के अन्य क्षेत्रों की भाँति चोलों का काल में भाषा एवं साहित्य का भी महत्वपूर्ण विकास हुआ चोलो ने संस्कृत कन्नड़ तमिल आदि सभी को संरक्षण प्रदान किया इस काल मे अनेक महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियों की रचना हुयी जैसे-

चोलकाल मे तेलगू भाषा में अनेक रचनाए लिखीगयी यह जनसाधारण की भाषा थी अनेक कवियों ने इस भाषा में सरल प्रेम गीतों की रचना की नन्नोड ने तेलगू में 'कुमार संभव' की रचना की। नन्नित ने तेलगू में महाभारत के प्रथमपर्व का अनुवाद किया।

तमिल भाषा एवं साहित्य का इस समय अभूतपूर्व विकास हुआ अलवार एवं नयनार सन्तो ने तमिल में अनेक रचनाए लिखी कम्बन द्वारा तमिल रामायण लिखा गया। रामायण महाभारत तथा पुराणों का अनेक लेखकों ने अनुवाद किया कम्बन, ओटकुट्टन तथा पुगलेनिद चोलो के काल में तमिल साहित्य के त्रिरत्न थे। ओटकुट्टन ने रामायण के अरकाण्ड का अनुवाद पुगलेनिद ने नलन्दमयंति कथा (महाभारत) का नलवेंबा नाम से संस्कृत से तमिल मे अनुवाद किया।

चोलकाल में कन्नड़ भाषा में अनेक साहित्यिक कृतियों की रचना हुई। शैवाचार्यों एवं संतो ने इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया। बासव राघवांक सिद्धराम आदि भक्ति कवियो ने कन्नड़ भाषा में अनेक भक्ति गीतो की रचना की।

चालुक्य कालीन साहित्य

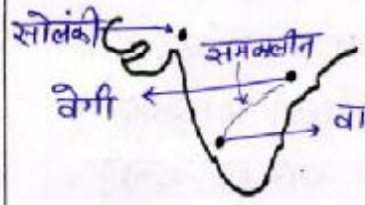

चालुक्य शासक कला संस्कृति एवं साहित्य के महान संरक्षक थे। शिक्षा एवं साहित्य को उन्होने काफी बढावा दिया। चालुक्यों ने संस्कृत साहित्य को संरक्षण प्रदान किया।

चालुक्यो के समय अनेक प्रसिद्ध कवि एवं लेखक हुए सोमदेव, गंगराज, आदि इस काल के महत्वपूर्ण लेखक थे। सोमदेव ने यशास्तिचपू तथा नीतिवाक्य मितम् की रचना की गंगराज ने शब्दावतार (व्याकरण की पुस्तक) की रचना की।

अनेक चालुक्य शासक खुद साहित्यकार थे। जैसे -

सोमेश्वर -III → मानसोल्लास (शिल्प शास्त्र की महत्वपूर्ण पु०)

विक्रमादित्य -VI → बिल्हण ने 'विक्रमांकदेवचरित' की तथा विज्ञानेश्वर ने मिताक्षरा (Law book) की रचना की।

राष्ट्रकूट कालीन साहित्य

(750 - 974 ई.)

मानसर्पेत
दंतिदुर्ग,
कृष्ण-I
गोविन्द-II, कर्क II

राष्ट्रकूटो का काल कला के साथ-साथ शिक्षा एवं साहित्य के उपलब्धियों का भी काल था। अनेक राष्ट्रकूट शासक स्वयं विद्वान एवं विद्याप्रेमी थे इनके समय कन्नड़ संस्कृत मराठी आदि भाषाओं में अनेक साहित्य लिखे गये। यह काल कन्नड साहित्य के विकास के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है।

राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष स्वयं एक बड़े लेखक थे उन्होंने अनेक विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया। अमोघ वर्ष ने कन्नड़ भाषा में कविराज मार्ग नामक महत्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की उसने गणितसार संग्रह के लेखक महावीराचार्य तथा आदिपुराण के लेखक जीनसेन (जैन) को संरक्षण प्रदान किया।

राष्ट्रकूटों के काल में अनेक महान विद्वान हुए। कविरहस्य के लेखक हलायुद्ध, कुमारिल तथा वाचस्पति जैसे दार्शनिक विचारक राष्ट्रकूटो के काल से ही संबंधित है। इसी समय कन्नड़ के तीन महान विद्वान जिन्हे त्रिरत्न की संज्ञा दी जाती है हुए ये थे पम्पा पुन्ना एवं रन्ना। ये तीनो महत्वपूर्ण जैन लेखक थे। पम्पा ने आदिपुराण पुन्ना ने शांतिपुराण तथा रन्ना ने अजीतपुराण की रचना की।

विजयनगर कालीन साहित्य

MBT का समय (1336-1650) ई.

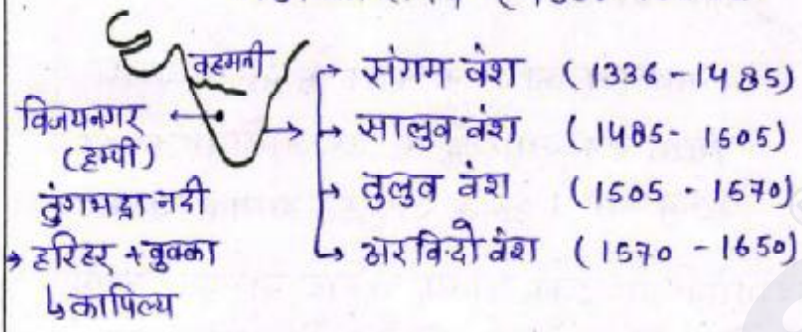

विजयनगर काल भाषा एवं साहित्य क्षेत्र में उल्लेखनीय विशेषताओं के लिए जाना जाता है विजयनगर के शासकों ने तेलगू संस्कृत तथा कन्नड़ जैसे भाषाओं को संरक्षण प्रदान किया उनके समय तेलगू साहित्य का विशेष विकास हुआ इस समय महान विद्वान एवं लेखक हुए तथा विविध भाषा में अनेक महत्वपूर्ण एवं विविध रचनाएं लिखी गयी।

विय

विजयनगर काल में संस्कृत भाषा में अनेक महत्वपूर्ण रचनाएं लिखी गई कुमार कम्पन की पत्नी गंगादेवी ने संस्कृत में मदुरा विजयम् की रचना की। इस ग्रन्थ से विजय नगर के प्रारम्भिक इतिहास पर प्रकाश पड़ता है विद्यारण्य ने संगीत पर संगीतसार की रचना की सायण ने चारो वेदो पर टीका लिखी इसी प्रकार माधवाचार्य (वैष्णव संत) ने सभी चिन्तन प्रणालियों को एकीकृत करते हुए सर्वदर्शन संग्रह की रचना की। कृष्णदेवराय ने संस्कृत में जाम्बवती कल्याण नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा। इससे उनके काल की महत्वपूर्ण घटनाओं की चर्चा मिलती है।

2. विजयनगर काल मे सबसे अधिक तेलगू भाषा एवं साहित्य का विकास हुआ इसका सर्वाधिक विकास कृष्ण देवराय के समय हुआ । K D राय स्वयं तेलगू के एक महान विद्वान थे उन्होंने तेलगू में अमुक्तमाल्याद की रचना की उनके दरबार मे तेलगू के 8 विद्वान रहते थे इनमे पेदन्ना , तिम्मन तेनालीराम अत्यन्त प्रसिद्ध तेलगू लेखक थे।

Q- विजयनगर शासक कृष्णदेवराय न केवल स्वयं मे कुशल विद्वान थे अपितु विद्या एवं साहित्य के महान संरक्षक भी थे । विवेचना कीजिए ।

Ans तुलुव वंश के शासक कृष्ण देव राय (1509-1529) विजयनगर के एक महान शासक थे शासक होने के साथ-2 एक विद्वान तथा ज्ञान एवं साहित्य के संरक्षक भी थे। उन्होने खुद अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना की एवं विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया उनका काल तेलगू साहित्य के विकास के विशेष काल के रूप मे जाना जाता है।

कृष्णदेव राय अत्यन्त महत्वपूर्ण लेखक एवं विद्वान थे यही कारण है कि उन्हे आन्ध्र पितामह, आन्ध्रभोज आदि की संज्ञा दी गयी उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण रचनाएं लिखी जिसमें अमुक्तमाल्याद जामवंती कल्याण, उषापरिणय आदि अत्यन्त महत्वपूर्ण है उनकी रचना अमुक्तमाल्याद तेलगू भाषा में राजनीति पर केन्द्रित है । विषय वस्तु की दृष्टि से इसका वही स्थान है जो कौटिल्य के ग्रन्थ अर्थशास्त्र तथा मैकियावेली के प्रिंस की है। इसमे विजयनगर काल के प्रशासनिक प्रणाली की विस्तृत चर्चा है।

ध्येय IAS
most trusted since 2003

कृष्णदेव राय ने अनेक विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया इनके दरबार में तेलगू के 8 महान विद्वान रहते थे जिन्हे अष्टदिग्गज की संज्ञा दी गयी थी। जिनमें पदन्ना, तिम्मन तेनालीराम भट्टमूर्ति आदि अत्यंत प्रसिद्ध थे इन्होने तेलगू में मनुचरितम् की रचना की। इसमें सामाजिक धार्मिक नियमो की विस्तृत जानकारी है इसी प्रकार तिम्मन ने परिजाताहरण तथा तेनालीराम ने पांडुरंगमहत्म जैसे ग्रन्थ लिखे।

इस प्रकार कृष्णदेव राय के समय उनके खुद के प्रयास एवं अन्य लेखकों के योगदान के आधार पर कहा जा सकता है कि वे स्वयं एक महान विद्वान विद्या एवं साहित्य के संरक्षक थे।

भारतीय दार्शनिक परम्परा

भारत में अनेक चिंतन प्रणालियों एवं दार्शनिक परम्परा का उद्भव हुआ।

वैदिक दर्शन

वेदों में
RV SV VV AV → उपनिषद् / वेदान्त (108)

दर्शन के विविध पक्षों पर अनेक गम्भीर चर्चाएं

1. आत्मा की सत्ता में विश्वास (व्यक्ति का अन्तर्मन सत्य है)
2. ब्रह्म की सत्ता में विश्वास (बाह्य सत्य का एक मात्र आधार ब्रह्म है।)
3. कर्मफल में विश्वास
4. कर्मकाण्ड की निंदा ज्ञान पर बल
5. मोक्ष पर विश्वास ज्ञान मार्ग से प्राप्त किया जा सकता है।

समस्त भारतीय दर्शन पर अनेक प्रभाव

1. प्राचीन भारत – बुद्ध, महावीर शंकर, रामानुज
2. मध्यभारत – सूफी संत, दाराशिकोह
3. आधुनिक भारत – विवेकानन्द, अरविंदो, गांधी

बौद्ध दर्शन

बुद्ध के विचार

चार आर्य सत्य

1. दुःख
2. दुःख का कारण
3. दुःख निरोध
4. दुःख निरोध का मार्ग

दार्शनिक समस्याओं पर बुद्ध का मत

1. ईश्वर की सत्ता नहीं है।
2. जगत प्राकृतिक नियमों / कारणों से संचालित है।
3. आत्मा को नहीं माना पुनर्जन्म में विश्वास (चेतना)
4. कर्मफल में विश्वास
5. क्षणिकवाद – कुछ भी स्थाई नहीं है इसलिए परिवर्तनशील है परिवर्तन ही सत्य है।

ध्येय IAS
most trusted since 2003

बुद्ध की शिक्षाएं -

बुद्ध ने दार्शनिक एवं सामाजिक जीवन के क्षेत्र में अनेक शिक्षाएँ दी समाज की अनेक समस्याओं का उन्होंने व्यवहारिक हल प्रस्तुत किया तथा महत्वपूर्ण विचार दिये। उनकी अनेक शिक्षाएँ वर्तमान में भी अनेक सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए प्रासंगिक हैं।

1. बुद्ध ने प्राणियों के प्रति दयाभाव दिखाने एवं अहिंसा भाव दिखाने की वकालत की।

2. उन्होंने दनिक जीवन में सदाचार के पालन पर बल दिया हिंसा नही करने, चोरी नही करने, मादक द्रव्यो का सेवन नही करने साधारण एवं शाकाहारी भोजन करने संसाधन का अतिशय दोहन सम्पत्ति संग्रह नही करने मृदुभाषी होने आदि की वकालत की।

3. बुद्ध ने जन्मजात श्रेष्ठता को स्वीकार नही किया। उनका कहना था कि व्यक्ति कर्म से ऊच या नीच होता है जन्म से नही उन्होंने छुआछुत को नही माना।

4. बुद्ध ने पुरुष के समान स्त्रियों के हक की वकालत की तथा अपने धर्म मे स्थान दिया तथा परिवार एवं समाज मे भी उनका सम्मान करने की वकालत की।

5. निचले वर्णों एवं जातियों के प्रति बुद्ध सहृदयी थे उन्हे संघ मे स्थान दिया। दासो तथा नौकरो के प्रति गृहस्थो से दयाभाव दिखाने की अपील की।

6. बुद्ध ने ईश्वर की बजाय मानव प्रतिष्ठा पर बल दिया उन्होंने अलौकिक शक्तियों की जगह तर्क एवं विवेक परबल दिया उनका कहना था कि समाज का निर्माण लोगो नेकेया

है ईश्वर ने नही अतः व्यक्तियों के प्रयास से इसे बदला जा सकता है। बुद्ध ने मानव की क्षमता एवं शक्ति पर बल दिया उन्होने मुक्ति का मार्ग स्वंय तलाशने की वकालत की तथा उन्होने "आत्मदीपोभव:" का संदेश दिया।

Q. बुद्ध के शिक्षाओं की वर्तमान में प्रासंगिकता की चर्चा कीजिए।

Q. बुद्ध के शिक्षाओं की वर्तमान प्रासंगिकता का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

जैन सिद्धान्त

दार्शनिक विचार

1. ईश्वर की सत्ता नही है।
2. जगत का कारण प्राकृतिक है।
3. बहुलवादी विचारों में विश्वास (अनेकान्तवादी, स्यादवादी)
4. मोक्ष पर बल, कायाक्लेश पर बल

नीतिशास्त्रीय / सामाजिक विचार

1. अहिंसा - जैनी अहिंसा पर विशेष बल देते हैं। यहां मनवचन, कर्म किसी भी रूप में हिंसा को स्वीकार नही किया।

2. जैनधर्म अहिंसा के साथ साथ सत्य अपरिग्रह ब्रह्मचर्य आदि के मूल पर बल देता है।

3. जैन धर्म कर्मफल मे विश्वास करता है व्यक्ति से अच्छा कर्म करने की वकालत करता है।

4. जैनधर्म विभिन्न विचारो का सम्मान करता है उसका कहना है कि सत्य निरपेक्ष नही बल्कि सापेक्ष होता है

सभी विचारो मे सत्य के अंश होते हैं उनके इस संदेश से वैचारिक समन्वय को बढ़ावा मिलता है।

जैनधर्म की प्रासँगिकता V/s अप्रासंगिकता

प्रासंगिकता

1. अहिंसा
2. कर्म सिद्धान्त
3. जाति एवं वर्ण विचार
4. अस्तेय अपरिग्रह ब्रह्मचर्य झूठ नही बोलना आदि
5. बहुलतावाद संबधी जैन विचार वैचारिक मतभेदों पर नियंत्रण लगता है तथा सौहार्द एवं समन्वय को बढ़ावा देता है।

अप्रासंगिकता

1. अहिंसा का कठोर रूप
2. कायाक्लेश द्वारा शरीर को क्लेश देना (संलेखना संथारा)
3. ज्ञान प्राप्ति के लिए तात्र त्याग कठोर सन्यासी जीवन आज अप्रासंगिक है।

Q. जैन शिक्षाओं की वर्तमान प्रासंगिकताओं का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

षड्दर्शन (6 दार्शनिक चिन्तन प्रणालियां)

सांख्ययोग, वैशेषिक, न्याय, पूर्वमिमांसा, उत्तर मिमांसा (वेदान्त)
शंकर रामानुज माधवाचार्य

Q. भारत में योग परम्परा पर प्रकाश डालिए। क्या प्राचीन भारत में योग का व्यवहार वैसे ही होता था जैसा की आज दिखाई देता है। यदि नही तो उसके बीच मुख्य अन्तर स्पष्ट कीजिए।

⇒ प्राचीन भारत में योग अनेक धर्मों एवं सम्प्रदायों में लोक प्रिय था मध्यकाल मे यह सूफीयों के बीच लोकप्रिय हुआ बौद्ध एवं जैन धर्म शैवधर्म, पतंजली के योग सूफीवाद आदि में योग से संबधित अनेक साक्ष्य प्राप्त होते है।

बौद्ध एवं जैन आचार्य आध्यात्मिक साधना के लिए योग का व्यवहार करते थे पतंजलि ने चित्तवृत्तियो के निरोध को योग कहा है तथा मुक्ती के लिए अष्टांग योग साधना प्राणायाम् आदि पर बल दिया है गीता में भी ज्ञानयोग कर्मयोग भक्तियोग की चर्चा है। शैवो मे अनेक सिद्ध योगी साधना के लिए योग का पालन करते थे निजामुद्दीन औलिया जैसे सूफियो ने रहस्यवादी साधना के लिए योग को अपनाया था। इस प्रकार योग किसी धर्म या संप्रदाय से संबंधित नही रहा है बल्कि यह लगभग सभी परम्पराओ से संबधित रहा है।

वर्तमान मे वैश्विक स्तर पर योग का व्यापक प्रचलन बढ़ा है लेकिन पारंपरिक योग वर्तमान योग से अनेक बिंदुओ पर अलग था जैसे –

ध्येय IAS
most trusted since 2003

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में योग को मुख्यत: आध्यात्मिक साधना के लिए अपनाया गया था एकाग्रता एवं आध्यात्मिक शांति के लिए योग किया जाता था लेकिन वर्तमान मे योग भौतिक / शारीरिक अभ्यास के रूप में अपनाया जाता है।

2. भारत का पारम्परिक योग मुख्यत: पूर्वी देशो जैसे- भारत, तिब्बत, नेपाल श्रीलंका चीन आदि तक सीमित था पश्चिमी देशो मे इसका प्रसार नही था लेकिन वर्तमान मे यह वैश्विक हो गया है। अमेरिका एवं यूरोप मे वर्तमान मे योग का काफी प्रसार हुआ है।

3. पारंपरिक योग कभ विक्रय से संबन्धित नही था योग की शिक्षा के लिए आचार्यों द्वारा सामान्यत: धन नही लिया जाता था लेकिन वर्तमान मे योग एक उत्पाद के रूप मे स्थापित हो गया है। जिसमे खरीद बिक्री की अवधारणा स्थापित हुयी है। पुस्तको CD, तथा कम्प्युटर प्रौद्योगिकी द्वारा योग का प्रसार-प्रचार तथा व्यवसायीकरण का प्रचलन बढ़ा है जबकि पारंपरिक रूप में ऐसा नही होता था

4. पारंपरिक योग मुख्यत: संतो एवं आचार्यो तक सीमित था। गृहस्थ जीवन मे इसका विशेष महत्व नही था। लेकिन वर्तमान में योग आम नागरिको गृहणी पेशेवरो के बीच वैश्विक स्तर पर यह काफी लोकप्रिय है।

Dhyeya IAS Now on Telegram

Join Dhyeya IAS Telegram Channel from link the given below

https://t.me/dhyeya_ias_study_material

नोट : पहले अपने फ़ोन में टेलीग्राम App Play Store से Install कर ले उसके बाद लिंक में क्लिक करें जिससे सीधे आप हमारे चैनल में पहुँच जायेंगे।

You can also join Telegram Channel through our website

www.dhyeyaias.com

www.dhyeyaias.in

ध्येय IAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

Subscribe Dhyeya IAS Email Newsletter
(ध्येय IAS ई-मेल न्यूजलेटर सब्स्क्राइब करें)

जो विद्यार्थी ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप (Whatsapp Group) से जुड़े हुये हैं और उनको दैनिक अध्ययन सामग्री प्राप्त होने में समस्या हो रही है | तो आप हमारेईमेल लिंक Subscribe कर ले इससे आपको प्रतिदिन अध्ययन सामग्री का लिंक मेल में प्राप्त होता रहेगा | **ईमेल से Subscribe करने के बाद मेल में प्राप्त लिंक को क्लिक करके पुष्टि (Verify) जरूर करें अन्यथा आपको प्रतिदिन मेल में अध्ययन सामग्री प्राप्त नहीं होगी |**

नोट (Note): अगर आपको हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यम में अध्ययन सामग्री प्राप्त करनी है, तो आपको दोनों में अपनी ईमेल से Subscribe करना पड़ेगा | आप दोनों माध्यम के लिए एक ही ईमेल से जुड़ सकते हैं |

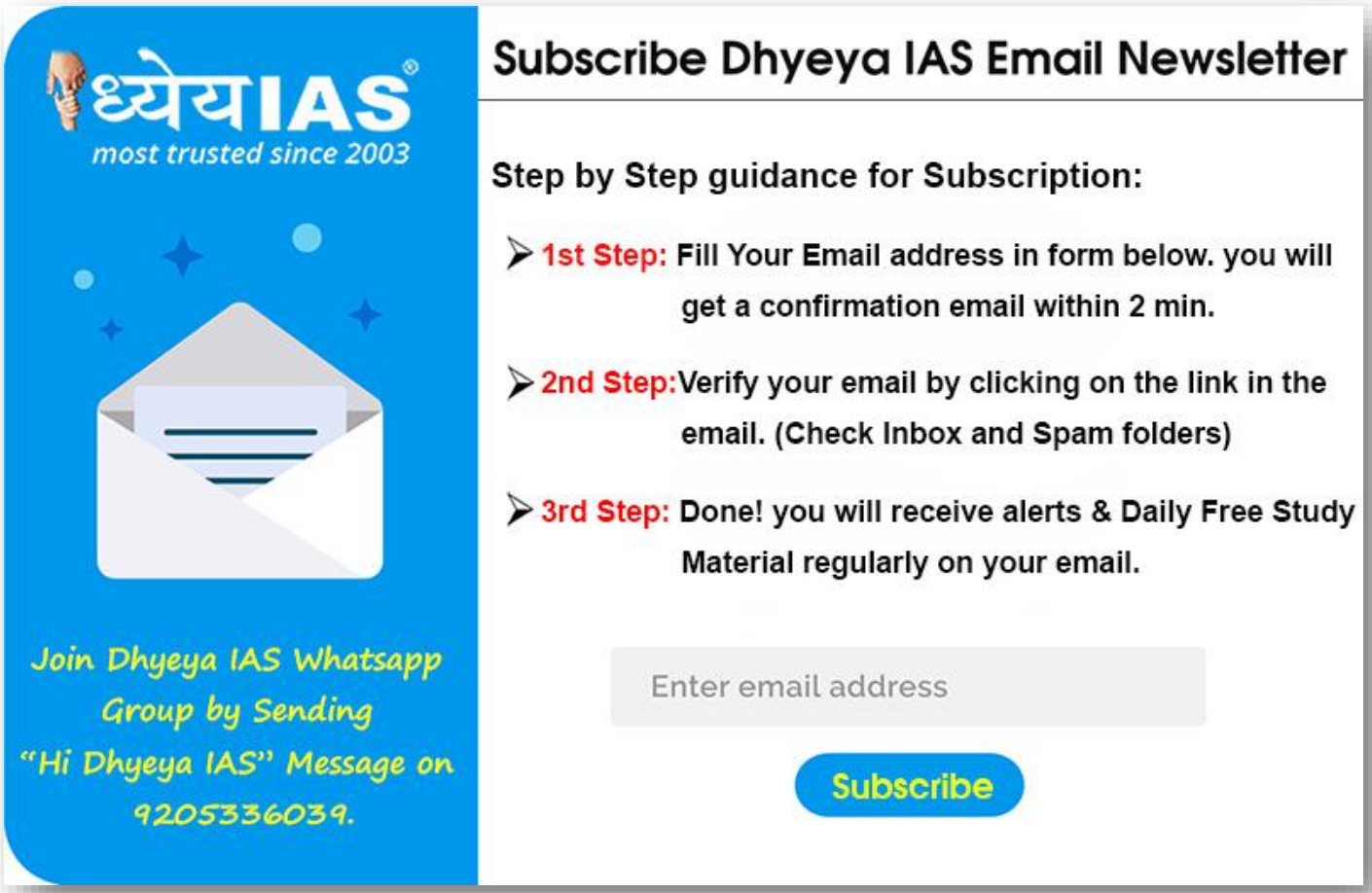

ध्येय IAS
most trusted since 2003
Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400

ध्येय IAS अब व्हाट्सएप पर
Dhyeya IAS Now on Whatsapp

ध्येय IAS के व्हाट्सएप ग्रुप से जुडने के लिए 9355174442 पर "Hi Dhyeya IAS" लिख कर मैसेज करें

नोट: अगर आपने हमारा Whatsapp नंबर अपने Contact List में Save नहीं किया तो आपको प्रीतिदिन के मैटेरियल की लिंक प्राप्त नहीं होंगी इसलिए नंबर को Save जरूर करें।

आप हमारी वेबसाइट के माध्यम से भी जुड सकते हैं

www.dhyeyaias.com
www.dhyeyaias.in

ध्येय IAS
most trusted since 2003

Address: 635, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi 110009
Phone No: 011-47354625/ 26 , 9205274741/42, 011-49274400